thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 33
सृष्टि संवत् 1960853115
23 नवम्बर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5063736

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 33, 20/23 नवम्बर 2014 तदनुसार 8 मार्गशीर्ष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

लोककर्त्ता भगवान ही सच्चा पिता

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

त्राता नो बोधि ददृशान आपिरभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम्।
सखा पिता पितृतमः पितृणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः।।

-ऋ. 4/17/17

शब्दार्थः ददृशानः =पुनः पुनः दर्शन देता हुआ वह **त्राता**= रक्षक होकर **नः** = हमें **बोधि**=सुझाता है। वही **आपिः** = बन्धु **अभिख्याता** = सामने से बताने वाला है और वही **सोम्यानाम्**= सौम्य=शान्त स्वभावों को **मर्डिता**=तृप्त करने वाला है, वह **सखा**= सखा मित्र **पिता**= पिता **पितृणाम्** = पालकों में से **पितृतमः**= सबसे अधिक पालक है, वह **वयोधाः** = जीवन दाता, कान्तिधारक, प्रकाशदाता **उशते** = अभिलाषी को **लोकम्** = प्रकाश **कर्त्ता+ इम्+उ**= देता ही है अथवा **वयोधाः** = जीवनदाता प्रभु उ=ही **उशते** = भोग-मोक्ष के अभिलाषी के लिये **लोकम्** = संसार को **कर्त्ता+इम्**= बनाता ही है।

व्याख्या= अन्तिम चरण में गहरा तत्व वर्णित है। उसको समझ लेने से मंत्र के शेष चरणों का भाव धारण करने में कठिनता नहीं होगी। मंत्र का अन्तिम चरण **-कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः** है। हमने इसके दो अर्थ लिखे हैं। भाव दोनों का एक ही है। जीव जीवन चाहता है, प्रकाश चाहता है, भोग चाहता है, मोक्ष चाहता है। उन सब का धाता तथा दाता वह परमेश्वर ही है। यह संसार उसने उशन्= कामना वाले के लिये बनाया है। योगदर्शन 2/18 में इसी भाव का एक सूत्र है- **भोगापवर्गार्थं दृश्यम्**- भोग और मोक्ष के लिये ही यह दृश्य-संसार है। अपना कोई प्रयोजन न होते हुये भी केवल जीवों के कल्याण के लिय भगवान लोक रचना करता है जैसा कि योग दर्शन 1/25 की व्याख्या करते हुये व्यास जी ने लिखा है- **तस्यात्मानुग्रहाभावेपि भूतानामनुग्रहः प्रयोजनम्**- उसका अपना कोई प्रयोजन न होते हुये भी जीवों पर कृपा ही प्रयोजन है। माता पिता भी भोग सामग्री देते हैं, परमात्मा की दी सामग्री से ही वे हमारे लिये देते हैं, अतः सच्चा पिता, सखा, पिताओं का पिता वही है इसीलिये कहा- **सखा पिता पितृतमः पितृणाम्।** केवल वह पालक ही नहीं, वह रक्षक भी है। मनुष्य को आग, हवा, पानी सभी से डर लगा रहता है। नदी, नाले, पर्वत समुद्र सभी से वह घबराता है। वह इसे रक्षक के रूप में मिलता और इसकी रक्षा करता है। तभी कहा- **त्राता नो बोधि ददृशानः** सचमुच बार बार यह रक्षक के रूप में दर्शन देता है। सांसारिक बन्धु विचारभेद होने पर, अथवा उनकी किसी बात के पूरा न होने पर, संग त्याग देते हैं, किन्तु भगवान कभी संग नहीं छोड़ते, सदा प्राप्त रहते हैं, अतः वे **आपिः** =बन्धु हैं।

वेद में दूसरे स्थान पर इसी भाव को इन शब्दों में प्रकट किया है- **स नो बन्धुर्जनिता स विधाता** वह हमारा बन्धु, उत्पादक तथा सुखदाता है। शेष बन्धु प्रयोजन के बन्धु हैं। परमात्मा सदा के बन्धु हैं, किसी स्वार्थ के बिना बन्धु हैं अतः सच्चा बन्धुत्व परमेश्वर में ही है। कहीं भूल चूक हुई, हुई क्या, उसका विचार भी उत्पन्न हुआ कि अंदर से ताड़ना की ध्वनि गर्जती है, वह प्रभु की ध्वनि है, अतः वेद परमात्मा को अभिख्याता सामने बिठा कर उपदेश देने वाला कहता है। सच्चे बन्धु का लक्ष्य भी यही है कि वह मित्र को कुमार्ग से बचाए। (ऋग्वेद 7/18/6) में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है- **सखा सखायमतरद् विषूचो** मित्र मित्र को विषम दशा से बचाता है।

परमात्मा सर्वज्ञ है। सम-विषम का पूर्ण ज्ञान उन्हें ही है। वह मनीषी मन में विषमभाव के आते ही चेतावनी देता है, सावधान करता है, अपनी मित्रता, निबाहता है। शान्तचित्त महात्माओं को शान्ति धन देकर तृप्त और शान्त करने वाला भी वही है- **मर्डिता सोम्यानाम्।** क्या हम सच्चे पिता, बन्धु, त्राता, मर्डिता, अभिख्याता सखा का प्रेम प्राप्त न करेंगे?

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

शुश्रूषा (=श्रवण की इच्छा पूर्वक परिचर्या)

शूद्र बहुपठित तो क्या पठित भी नहीं हो सकता है। उसका यह गुण समाज में उसकी प्रमाणिकता के लिए पर्याप्त है। भगवान् मनु द्वारा शूद्र के लिए विहित एकमात्र कर्त्तव्य में सुनना परम धर्म बताया गया है। वहां "एव" का प्रयोग करके तो मानो उसके एकमात्र धर्म की घोषणा कर दी गई है। **एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्। एतेषाम् एव वर्णानां शुश्रुषामनसूयया।** (मनु० १।९१) शूद्र का एक ही महान् कर्म है कि वह अन्य वर्णियों की असूयारहित होकर शूश्रुषा करे, सेवा करे। इस शुश्रूषा शब्द में ही कमाल है कि वह सेवा तो करे, परन्तु सुनना न छोड़े। वह ब्राह्मण के पास रहकर उसकी सेवा तो करे परन्तु उससे वेदादि सच्छास्त्रों को सुनना न छोड़े। वह क्षत्रिय योद्धा की सेवा में रहे, परन्तु उसका सुनना न छूटे। वह वैश्य की सेवा में रहे, परन्तु वेद सुनना न छोड़े। इस प्रकार श्रवणपूर्वक सेवा करते-करते शूद्र भी बहुश्रुत बन जाए और समाज में आदर का पात्र बने, अत: महर्षि के तृतीय उद्देश्य में सुनना परम-धर्म लिखना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस उद्देश्य में जहां द्विजों के परम धर्म अध्यापनम्-अध्ययनम् का समावेश है, वहां शूद्र के परम धर्म "सुनना" का भी समावेश है। दयालु दयानन्द शूद्र को कैसे भुला सकते थे। इसलिए उसका धर्म सुनना (जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, आर्यमात्र सभी के लिए परम धर्म है) भी समाविष्ट कर दिया। अन्यथा शूद्र के लिए इस उद्देश्य में कोई स्थान न रहने से, पूर्वाचार्यों की भांति दयानन्द भी उसी कोटि में आ जाते और उनकी यह स्थापना कि मनुष्य मात्र को वेदाधिकार है, उनके उद्देश्यों से प्रमाणित न हो पाती।

शुश्रूषा शब्द का अर्थ जहां सेवा है वहां श्रोतुमिच्छा शुश्रूषा 'सुनने की इच्छा' भी एक अर्थ है। शूद्र को जहां अन्य वर्णियों की सेवा का वरण करना है वहां सुनने की इच्छा (शुश्रूषा) का भी वरण करना है। इस (बात का) वरण करने के कारण ही शूद्र वर्ण है। उसे किसी की सेवा में रहने से पहले अपने स्वामी से निश्चय कर लेना चाहिए कि आपकी सेवा करते हुए (वेद) सुनना परम धर्म न छोड़ूंगा और द्विज का भी कर्त्तव्य है कि शूद्र से शुश्रूषा लेते हुए उसकी शुश्रूषा (सुनने की इच्छा) न छूटने पाए। इस प्रकार द्विज और शूद्र परस्पर सुनना परम-धर्म का पालन कर पुण्य के भागी बनें।

श्रवण-मनन-निदिध्यासन

श्रवण-मनन-निदिध्यासन तत्त्व-त्रय में श्रवण का स्थान सर्वप्रथम है। "सुनना" सर्वोपरि है। सुनने के पश्चात् ही मनन और निदिध्यासन होगा। स्वयं भगवती श्रुति ने अथर्ववेद में इसका वर्णन भक्त के मुख से मुखरित कराया है कि "मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।" मेरा सुना हुआ मुझमें स्थान बनाए, प्रतिष्ठित हो जाए, ठहर जाए। स्था गतिनिवृत्तौ स्था धातु गति-निरोध के अर्थ में प्रयुक्त होती है। सुना हुआ चल न दे, वह मुझमें स्थित हो जाए। स्थित तभी होगा, जब मनन और निदिध्यासन होगा। मनन और निदिध्यासन तभी होगा जब सुनना होगा। अत: महर्षि ने इस श्रवण की महत्ता को समझा था, तभी वेदाज्ञा 'श्रुतम्' का भी अपने उद्देश्य में समाविष्ट कर लिया। सुनना परम-धर्म है।

श्रवण (सुनना) से ही श्रवण (कान) और श्रुति की सार्थकता है। यदि महर्षि ने आर्य समाज के तृतीय उद्देश्य में सुनना परम धर्म न लिखा होता, तो शेष तीनों परम धर्म वाणी का विषय ही रहते, व्यक्ति का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना वाणी तक सीमित रहता। सुनना आते ही श्रवण (कान) भी सार्थक हुए। वाणी का पढ़ाना और सुनाना भी तभी सार्थक होता है, जब सामने वाला सुनने को अपना परम धर्म समझता है। यदि वह सुनने को परम धर्म न माने तो आपका पढ़ाना और सुनाना धर्म पूर्ण न हो सकें प्रवचन हो ही न पाए। साथ ही जो व्यक्ति इस परम धर्म पर स्वयं आचरण कर रहा है वह पढ़ना, पढ़ाना और सुनाना तो कर पाता, "सुनने" (परम धर्म) के न होने से उसके कानों का क्या मूल्य रहता ? जिस व्यक्ति के पास सुनना (श्रवणशक्ति) नहीं अर्थात् जन्म-बधिर है, वह गूंगा अवश्य है। इसलिए स्वाध्याय और प्रवचन से भी बढ़कर स्थान सुनने का है। कोई भी बात वाणी का विषय तभी बनेगी जब वह पहले श्रवण का विषय बन चुकी हो। जहां मनुष्य योनि की सार्थकता वाणी में है, वहां वाणी की सार्थकता श्रवण में निहित है, सुनने में निहित है।

वेदों की 'श्रुति' संज्ञा इसलिए पड़ी कि सर्वप्रथम यह ज्ञान श्रवण का विषय बना। आदि ऋषियों ने, जिनकी आत्मा में इस ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ था, जब इसका उच्चारण किया तो, अन्यों ने सुनकर ही इससे जाना। इसलिए इसका नाम श्रुति पड़ गया। नवजात शिशु भी सुन-सुनकर ही ज्ञान प्राप्त करता है। इसलिए सुनना परम धर्म लिखकर महर्षि ने लोकसेवा का एक अद्वितीय कार्य किया है।

सुनने का कितना महत्त्व है, यह आप इस बात से जान सकते हैं कि महाभारतन्तर्गत नारद-युधिष्ठिर संवाद में जो कि "कच्चित् अध्याय" के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें नारद ने बराबर कच्चिद्-कच्चित् कहकर प्रश्नों की झड़ी लगा दी है, यदि कुछ प्रश्न राज्य से सम्बद्ध हैं, धर्म से सम्बद्ध हैं, तो वहां कुछ प्रश्न युधिष्ठिर के व्यक्तिगत जीवन से भी सम्बद्ध हैं। एक श्लोक में वेद, धन, पत्नी और श्रुत की सफलता के बारे में प्रश्न करते हैं कि हे राजन्! कच्चित्ते सफला वेदा: ? कच्चिते सफलं धनम् ? कच्चित्ते सफला दारा: कच्चिते सफलं श्रुतम् ? (महा० सभा० ५।९९) क्या तुम्हारा वेदाध्ययन सफल है ? क्या तुम्हारा धन सफल है ? क्या तुम्हारा पत्नी-लाभ सफल है ? और अन्तिम प्रश्न यह कि ऐ राजन्! यह भी बताओ कि क्या तुम्हारा श्रुत (सुनना) सफल है ? तुम्हारा सुनना भी कोई फल देता है व नहीं ?

इस पर युधिष्ठिर महाराज ने नारद से यह पूछा, "भगवन्! मुझे इन उक्त धर्मों के फल का ज्ञान नहीं। यदि इनके फलों का परिगणन कर दें, तभी मैं बता सकता हूं कि ये फल मुझे प्राप्त हैं या नहीं। इस पर नारद ने फलों का परिगणन कराते हुए कहा है, देखो युधिष्ठिर! अग्निहोत्र फला वेदा:, दत्त-भुक्त-फलं धनम्, रति-पुत्र-फला दारा: शील वृत्तफलं श्रुतम्" (महा० सभा० ५.१०९) वेदाध्ययन का फल यज्ञ के मूल रहस्यों को जानना है, धन का फल दान और भोग है, पत्नी का फल रति-सुख और पुत्र-लाभ है, सुनने का फल शील और वृत्त है।

इस प्रसंग में हमारे लेख का विषय श्रुतम् (सुनना) है, जिसके दो फल शील और वृत्त बताए हैं, ये दोनों ही वे महापल हैं, जिनमें सभी फल अन्तर्निहित हैं। मनुष्य की मनुष्यता इन्हीं पर आधारित है, जिसमें ये तत्त्व (शील और वृत्त) हैं, वे ही आर्य हैं। तो सुनने के ये दो महाफल हुए-शील और वृत्त शील-वृत्त फलं श्रुतम्। महर्षि दयानन्द द्वारा उद्दिष्ट परमधर्म-चतुष्टय में से व्यक्ति एक "सुनना" का ही आचरण करे, तो वह आर्य बन जाता है। वह शील और वृत्त से युक्त हो जाता है। शील वह सम्पत्ति है, जिसके रहने से सब गुण आ जाते हैं और जिसके जाते ही धर्म, सत्य, वृत्त, बल और श्री अपना डेरा उठा लेते हैं, अर्थात् शील के जाते ही व्यक्ति अधर्मात्मा, असत्यवादी, वृत्तहीन और श्रीहीन हो जाता है।

महाभारत के प्रह्लाद-इन्द्र उपाख्यान में यही दिखाया गया है कि इन्द्र ने प्रह्लाद से उसका जब शील मांग लिया और प्रह्लाद के तथास्तु कहते ही शील ने प्रह्लाद के शरीर से उत्क्रमण कर इन्द्र के शरीर में प्रवेश किया, तब तत्काल एक अन्य दिव्य तेज उनके देह से निकलकर प्रयाण करने लगा। प्रह्लाद ने मार्ग रोककर पूछा-"तुम कौन हो, जो मुझे छोड़कर जा रहे हो ?" उस समय तेजोमय दिव्य व्यक्ति ने कहा, "मुझे धर्म कहते हैं। मैं अब यहां नहीं रह सकता। मेरा ठिकाना वहीं होगा, जहां शील का निवास होगा, मुझे उसका अनुसरण करना है।" यह कहकर वह इन्द्र के शरीर में प्रविष्ट हो गया।

प्रह्लाद खिन्नमनस् थे ही, चिन्तित थे ही, सहसा क्या देखते हैं, कि एक अन्य तेजोमय विभूति भी उनके देह का परित्याग कर बाहर निकल रही है। प्रह्लाद उसे जाते देख पूछ बैठा, "महाभाग! तुम कौन हो ? कहां जा रहे हो ? तुमने मेरा परित्याग क्यों किया ?" वह बोला, "प्रह्लाद! मुझे सत्य कहते हैं। मैं अब यहां न रह सकूंगा। मेरा वहीं निवास है, जहां शील और धर्म रहते हैं, तुमने शील और धर्म का परित्याग कर दिया है अब मैं वहीं जाऊंगा।" यह कह इन्द्र के शरीर में प्रविष्ट हो गया।

(क्रमश:)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

बाल दिवस मनाने की सार्थकता

14 नवम्बर को हमारे देश के प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी के जन्मदिवस को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। पूरे देश में इस अवसर पर स्कूलों, कॉलेजों तथा अन्य स्थानों पर बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष भी बाल दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। नेहरू जी को याद करते हुए भारत के नव निर्माण में उनके योगदान को व्याख्यानों और भाषणों द्वारा रेखांकित किया गया और उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी गई। इसी प्रकार हम प्रत्येक वर्ष बाल दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं और बाल अधिकारों की बातें करते हैं। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वही किया जो पिछले वर्ष किया था।

परन्तु हम इस पर गहराई से चिन्तन करें तो वास्तविक स्थिति कुछ और ही दिखाई देती है। हमारे देश में आज भी बाल मजदूरी और बन्धुआ मजदूरी के द्वारा बच्चों का शोषण किया जाता है। आज हमें गंदगी के ढेरों पर पॉलीथीन, कांच व पलास्टिक के टुकड़े और जूठन के निवाले के लिए झगड़ते हुए बच्चे दिखाई पड़ते हैं। अगर हम आंकड़ों के अनुसार देखें तो हमें अपनी वास्तविक स्थिति दिखाई देगी। अकेले दिल्ली में 18 बच्चे प्रतिदिन लापता होते हैं। लापता बच्चों के मामले में महाराष्ट्र पहले स्थान पर, मध्यप्रदेश दूसरे स्थान और दिल्ली तीसरे स्थान पर हैं। इन लापता होने वाले बच्चों में 53 प्रतिशत लड़किया हैं। वर्ष 2011 में हमारे देश में 90654 बच्चे लापता हुए जिनमें से 34406 का कोई सुराग नहीं मिला। वर्ष 2012 में 65038 बच्चे लापता हुए। वर्ष 2012 में 39336 लड़कियां और 25702 लड़के लापता हुए। वर्ष 2013 में 135262 बच्चे गुम हुए और जुलाई 2014 तक 36704 बच्चे लापता हो चुके है। यह स्थिति है हमारे देश की जहां पर बाल दिवस मनाया जाता है। बच्चों के उत्थान के लिए बड़े-बड़े भाषण दिए जाते हैं। आज भी 6 से 11 वर्ष की आयु के 14 लाख बच्चे स्कूल नहीं जाते और 44 लाख बच्चे बाल मजदूरी करते हैं। यह तो हैं प्रत्यक्ष आंकड़े जो दिखाए जाते हैं और यह स्थिति है हमारे देश की। इसके अलावा क्या इस सच्चाई से भी मुंह मोड़ा जा सकता है कि भारत में 5 से 15 वर्ष के कुल बच्चों की एक तिहाई संख्या, जिनकी उम्र पढ़ने लिखने और खेलने की है, बाल मजदूर बनकर ढाबों तथा घरों में बर्तनों के ढेर साफ करते हैं तथा छोटे-छोटे कारखानों में 14 घंटे कड़ी मेहनत करते हैं। वास्तव में बाल शोषण, बाल मजदूरी से निकलकर बाल भिक्षावृत्ति, बाल अपराध और बाल वैश्यवृत्ति तक पहुंचते-पहुंचते यह तस्वीर बहुत डरावनी हो जाती है क्योंकि यह तस्वीर ऐसे नरपिशाचों द्वारा बनाई जाती है जो मानवता के नाम पर कलंक है। ऐसे हैवान लोगों का यही वर्ग मासूम बच्चों को ऐसे व्यक्तियों के हाथों बेच देता है जो उनसे चोरी, जेबकतरी, भिक्षावृत्ति, तस्करी और न जाने कितने अपराधों को अंजाम दिलवाते हैं। इसके अलावा भारत में अशिक्षा तथा गरीबी इतनी अधिक है जिसके कारण इस प्रकार के घृणित कार्य होते हैं। बिकने वाले अधिकतर बच्चे बेघर-बेसहारा तथा गरीब तबके के ही होते हैं। कुछ गरीब तो जान बूझकर अपने बच्चों को इस नरक में धकेल देते हैं जबकि कुछ को काम दिलाने के नाम पर अपने चंगुल में फंसा लेते हैं।

यह है वर्तमान स्थिति जिस स्थिति में हम जी रहे हैं। हम 14 नवम्बर को बाल दिवस के अवसर पर बड़े उत्साह से स्कूलों में कार्यक्रम आयोजित करते हैं, बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लम्बे चौड़े भाषण दिए जाते हैं। परन्तु बाल दिवस की औपचारिकता पूरी होने के उपरान्त सब कुछ पहले की तरह होने लगता है। फिर अगले वर्ष हमें बाल दिवस की याद आती है। बच्चों के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य है, क्या आज हमें घरों में श्रम करते हुए बच्चे नहीं दिखाई देते? क्या आज हमें कूडा बीनते बच्चे नहीं देते? क्या किताबों की जगह बीड़ी-सिगरेट हाथ में लिए बच्चे भी हमें दिखाई नहीं देते? अगर हमें दिखाई देते हैं तो हम क्यों अनदेखा करते हैं? क्या हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है? यह बहुत से प्रश्न है जिनका कोई उत्तर किसी के पास नहीं है। आज हर कोई इन समस्याओं से मुंह फेर लेता है और बाल दिवस पर बाल अधिकारों की बातें करने लगता है।

14 नवम्बर को बाल दिवस के अवसर पर बचपन बचाओ आन्दोलन के सूत्रधार और नोबेल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी एन.डी.टी.वी. और जी. न्यूज पर कुछ बच्चों के साथ जिन्हें उन्होंने बाल मजदूरी, बन्धुआ मजदूरी आदि से छुड़ाया था उनके साथ देश को सन्देश दे रहे थे कि आपकी चुप्पी एक बचपन को मार सकती है। उन्होंने बताया कि उनके संगठन के द्वारा आज तक 80 लाख बच्चों को छुडाया जा चुका है। श्री कैलाश सत्यार्थी जी ने बताया कि आज हर व्यक्ति को नजर रखनी होगी। यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अगर आज सत्यार्थी बनकर एक-एक बच्चे को भी उसका पढ़ाई का अधिकार दिलाता है, उसे बाल मजदूरी से छुड़ाता है तो मैं समझता हूं कि हमारा देश बाल मजदूरी, बन्धुआ मजदूरी, बाल भिक्षावृत्ति के कलंक से छुटकारा पा सकता है। इसके लिए समाज में प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने कर्त्तव्य का पालन करे। आज समाज को एक कैलाश सत्यार्थी की नहीं अनेकों की आवश्यकता है। श्री कैलाश सत्यार्थी जी को जब नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था तो उन्होंने कहा था कि उन्हें इस कार्य की प्रेरणा आर्य समाज से मिली है। आज अगर हम सभी अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए उनके बचपन बचाओ आन्दोलन में सहयोग देते हैं तो उनका आन्दोलन सफल होगा।

बाल दिवस को मनाना तभी सार्थक हो सकता है जब हम देश के उन बहुसंख्यक बच्चों के उत्थान में जुट जाए जो शोषण की चक्की में पिसते हुए पशुओं से भी बदतर जीवन जी रहे हैं। बाल दिवस को मनाने का अर्थ यह नहीं कि हम समारोहों में भाषण देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लें और विभिन्न प्रकार के शोषण के चक्रों में फंसे गरीब और अनाथ बच्चों के लिए कुछ न करें। अगर हम कहीं पर भी बाल मजदूरी देखते हैं, बच्चों को कूड़ा बीनते हुए देखते हैं तो हम चुप बैठने के बजाय अपने कर्त्तव्य का पालन करें। जिस प्रकार आप अपने बच्चों के लिए सब कुछ करते हैं उसी प्रकार वे भी किसी के बच्चे हैं। उन्हें भी शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए, उन्हें भी इस नरक से मुक्ति मिलनी चाहिए। राष्ट्र की प्रत्येक समस्या का समाधान करना किसी नेता या प्रधानमन्त्री का ही कर्त्तव्य नहीं बल्कि हम भी इस राष्ट्र के अंग है। हमारा भी इस राष्ट्र के प्रति कुछ कर्त्तव्य है। समस्या का समाधान ढूंढने के बजाय हम खुद उस समस्या का हल बन जाए। श्री कैलाश सत्यार्थी के अनुसार सवाल उठाओ चुप करके मत बैठ जाओ। हर बच्चा पढ़ेगा- यह भारत आगे बढ़ेगा और उन्नत तथा खुशहाल बनेगा। यही बाल दिवस मनाने की सार्थकता है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज बरनाला में ऋषि निर्वाण दिवस का आयोजन

आर्य समाज बरनाला की ओर से दिनांक 22.10.2014 दिन बुधवार को महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री के मार्गदर्शन में देव यज्ञ अग्निहोत्र सम्पन्न किया गया। तत्पश्चात् गांधी आर्य हाई स्कूल के प्रांगण में बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों द्वारा ईश्वर स्तुति-प्रार्थना मंत्रों का सस्वर पाठ किया गया। उसके बाद छात्र/छात्राओं ने अवसर अनुकूल भजन व भाषण के द्वारा ऋषि गाथा का गुणानुवाद किया। आर्य समाज बरनाला के गणमान्य विद्वान आर्य सदस्यगण श्री रणजीत शास्त्री, श्री हरमेल सिंह जोशी, श्री भारत भूषण मैनन, श्री राजकुमार सोबती, श्री राम शरणदास गोयल ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित किया। श्री रामचन्द्र आर्य एवं श्री शिव कुमार बत्ता ने अवसर अनुकूल सुन्दर भजन सुनाए। अन्त में प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी ने उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद करते हुए वैदिक विचारधारा को पूर्णत: अपनाने के लिए प्रेरित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दिशा-निर्देश में गांधी आर्य हाई स्कूल की छात्राओं ने गायत्री मंत्र अर्थ सहित, आर्य समाज के दस नियम क्रमानुसार, ईश स्तुति प्रार्थना व उपासना के आठ मंत्रों का सस्वर कंठस्थ करने वाले छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-तिलक राम-मंत्री आर्य समाज

thearyasamaj.org

पति-पत्नी का आपसी सम्बन्ध-अथर्ववेद

-ले० शिव नारायण उपाध्याय 73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

गृहस्थ आश्रम की गाड़ी ठीक तरह से तभी चल पाती है जब घर में पति-पत्नी आपस में मिलकर एक दूसरे से प्रीति करने वाले हों। दोनों एक दूसरे की भावना को समझने का प्रयत्न करें और उसका सम्मान भी करें। इसके लिए सबसे पहले इस बात का ध्यान रखा जाए कि दोनों पूर्ण रूप से शिक्षित हों, उनकी आयु में भी बहुत अन्तर न हो और न बाल्य अवस्था में विवाह हो। अथर्ववेद में काण्ड 12 सूक्त 3 काण्ड 14 सूक्त 1 व 2 में इस विषय में पर्याप्त वर्णन हुआ है, दूसरों काण्डों में भी इस विषय में बहुत कुछ कहा गया है। परन्तु हम इस लेख में केवल इन्हीं दो काण्डों के आधार पर इस विषय पर वेद के विचार जानने का प्रयत्न करेंगे।

विवाह शिक्षा समाप्ति के पूर्व नहीं होना चाहिए।

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः।
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत् पुरोगवः॥ -अथर्व. 14.1.8

पदार्थ-(स्तोमाः) स्तुति योग्य गुण (सूर्यायाः) प्रेरणा करने वाली कन्या के (प्रतिधयः) वस्त्रों के अंचल (समान) (आसन्) हों। (कुरीरम्) कर्त्तव्य कर्म और (छन्दः) आनन्द प्रद वेद (ओपशः) मुकुट समान हों और (अग्निः) अग्नि (शारीरिक) (पुरोगवः) अग्रगामी (आसीत्) हों जबकि (अश्विना) विद्या को प्राप्त दोनों (पति-पत्नी) (वरा) परस्पर चाहने वाले हों।

भावार्थ-जब कन्या ब्रह्मचर्य का निर्वाह करती हुई शिक्षा प्राप्त कर ले और शारीरिक दृष्टि से भी निरोग हो तब अपने समान विद्या प्राप्त स्वस्थ ब्रह्मचारी से विवाह करें।

सोमा वधू युरभवदश्विना स्तामुभा वरा।
सूर्यां यत् पत्ये शंसन्ती मनसा सवितादददात्॥ -अथर्व. 14.1.9

पदार्थ-(सोमः) शुभ गुण संयुक्त ब्रह्मचारी (वधूयुः) वधू की कामना करने वाला (अभवत्) हो (उभा) दोनों (अश्विना) विद्या को प्राप्त (वरा) परस्पर चाहने वाले (आस्ताम्) हों, (यत्) जब (पत्ये) पति के लिए (मनसा) मन से (संशन्तीम्) गुण कीर्तन करती हुई (सूर्याम्) प्रेरणा करने वाली कन्या को (सविता) जगत् का उत्पादक परमात्मा (अददात्) देवे।

भावार्थ-ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी अपनी विद्या समाप्त करने के बाद परस्पर गुणों की परीक्षा करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करे और परमेश्वर को धन्यवाद देवे क्योंकि बड़े भाग्य से तुल्य गुण, कर्म और स्वभाव वाले स्त्री-पुरूषों का जोड़ा मिलता है।

पति-पत्नी को चाहिए कि आपस में प्रेम का व्यवहार करें।

प्रेतो मुञ्चामि नामुतः सुबद्धाममुतस्करम्।
यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगासति॥ -अथर्व. 14.1.18

पदार्थ-(इसः) इस (वियोगपाश) से (इस वधू को) (प्र मुञ्चामि) मैं वर अच्छे प्रकार छुड़ाता हूं, (अमृतः) उस प्रेम पाश से (न) नहीं छुड़ाता, (अमृतः) उस प्रेम पाश में (इस वधु) को (सुबद्धम) अच्छे बन्धनमुक्त (करम्) मैं करता हूं। (यथा) जिससे (मीढ्वः) हे सुख की वर्षा करने वाले (इन्द्र) परम ऐश्वर्य वाले परमात्मा। (इयम) यह वधू (सुपुत्रा) सुन्दर पुत्रों वाली और (सुभगा) बड़े ऐश्वर्य वाली (असति) होवे। स्त्री को कर्म कुशल होना चाहिए और धन का सदुपयोग करना भी आना चाहिए। इन गुणों के कारण वह पति की अत्यन्त प्रिय बन जाती है।

नील लोहितं भवति कृत्या-सक्ति र्व्यज्यते।
एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते॥
-अथर्व 14.1.26

पदार्थ-(नील लोहितम्) निधियों का प्रकाश (भवति) होता है, जबकि (कृत्या) कर्त्तव्य कुशल पत्नि की (आसक्ति) प्रीति (वि अज्यते) प्रसिद्ध होती है। (अस्या) इस पत्नि के (ज्ञातयः) कुटुम्बी लोग (एधन्ते) बढ़ते है और (पति) पति (बन्धेषु) पत्नी के प्रेम के बन्धन में (बध्यते) बंध जाता है।

भावार्थ-जिस प्रकार परिवार में कर्म कुशल बुद्धिमान स्त्री धन की हानि लाभ विचार कर कर्त्तव्य करती है। वहां धन सम्पत्ति बढ़ती है। पति उससे हार्दिक प्रीति करने लगता है।

पति-पत्नी के मध्य मतभेद नहीं होना चाहिए। उन्हें सदैव एकमत होकर ही कार्य करना चाहिए। इससे घर में शान्ति स्थापित होती है।

यद्यज्जाया पचति त्वत् परः परः पतिर्वाजाये त्वत् तिरः।
सं तत् सृजेथां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम्।
-अथर्व 12.3.39

पदार्थ-(हे पति) (यद्यत्) जो कुछ वस्तु (जाया) पत्नि (त्वत्) तुझ से (परः परः) अलग-अलग (पचति) पकाती है, (का अथवा (जाये) हे पत्नि। (पतिः) पति (त्वत्) तुझसे (तिरः) गुप्त गुप्त, चुपके चुपके (कुछ पकाता है।) (एकम्) एक (लोकम्) धर को (सह) मिलकर (सम्पादयन्तौ) बनाते हुए तुम दोनों (तत्) उस गृह कार्य को (सं सृजेयाम्) मिलाओ, (तत्) वह गृह कर्म (वाम्) तुम दोनों का (सह) मिलकर (अस्तु) होवे।

भावार्थ-पति-पत्नी के बीच में कोई दुराव छिपाव नहीं होना चाहिए। दोनों मिलकर ही सदा एक मत होकर ही गृह कार्य करें।

पति-पत्नी के बीच असभ्य भाषण कभी भी नहीं होना चाहिए।

यदक्षेषु वदा यत् समित्यां यद्धावदा अनृतं वित्तकाम्या।
समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्त्सर्व शमलं सादयाथः॥
-अथर्व. 12.3.52

पदार्थ-(हे स्त्री वा पुरूष) (यत्) जो कुछ (झूठ) (अक्षेषु) अभियोगों (राजगृह के विवादों) में (अथवा) (यत्) जो कुछ (झूठ) (समित्याम्) संग्राम में (वदाः) तू बोले, (वा) अथवा (यत्) जो कुछ (अनृतम) झूठ (वित्तकाम्या) धन की कामना से (वदाः) तू बोले, (समानम्) एक ही (तन्तुम् अभि) तन्तु (वस्त्र) में (संवसानौ) ढके हुए तुम दोनों (पति-पत्नी) (तस्मिन्) उस झूठ में (सर्वम्) सब (शामलम्) भ्रष्ट कर्म को (सादयाथः) स्थापित करोगे।

भावार्थ-सब स्त्री पुरूषों के लिए आवश्यक है कि दोनों एक दूसरे को अपने समान समझ कर कठिन से कठिन आपत्ति में भी असत्य न बोले। असत्य बोलना ही सब विवादों का मूल है।

स्त्री-पुरूष सदैव शुभ कर्म करें, अज्ञान को दूर करें और शुभ गुणों को जीवन में धारण करें।

वर्षं वनुष्यापि गच्छा देवास्त्वचो धमं पर्युत्पातयासि।
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोरूमुप याहोतम्॥ -अथर्व. 12.3.53

पदार्थ-(अस्मिन् लोके) इस लोक (संसार व जन्म) में (सम्) मिलकर (देवयाने) विद्वानों के मार्ग में (उ) ही (सम्) मिलकर (यमराज्येषु) न्यायाधीश (परमात्मा) के राज्यों (राज्य नियमों) में (सम रूप) अवश्य मिलकर (समेतम्) तुम दोनों साथ-साथ चलो। (पवित्रैः) पवित्र कर्मों से (पूतौ) पवित्र तुम दोनों (तत्) उस बल को (उप तद्धवयेथां) आदर से बुलाओ (यद्यत्) जो जो (रेतः) वीर्य (बल) (वाम्अधि) तुम दोनों में अधिकारपूर्वक (संबभूव) उत्पन्न हुआ है।

भावार्थ-स्त्री पुरूषों को चाहिए कि संसार के बीच विद्वानों के मार्ग से परमात्मा के नियमों में चलकर धार्मिक व्यवहार से दोनों मिलकर उस सामर्थ्य का प्रकाश करें जो उन्होंने ब्रह्मचर्य से पाया है।

पति-पत्नी को चाहिए कि जैसे उनके माता-पिता ने कोई पाप कर्म नहीं किया है और न ही कोई असत्य आचरण किया है वैसे वे भी करें।

यं वा पिता पचति यं च माता रिप्रान्निर्मुक्त्यै शमलाच्च वाचः।
स ओदनः शतधारः स्वर्गं उभे व्याप नभसी महित्वा।
-अथर्व. 12.3.5

पदार्थ-(यम्) जिस (परमेश्वर) को (वाम्) तुम दोनों का (पिता) पिता (च) और (यम्) जिसको (माता) तुम्हारी माता (रिप्रात्) पाप से (च) और (शमलात्) भ्रष्ट व्यवहार से (निर्मुक्त्यै) छूटने के लिए (वाचः) अपनी कणियों द्वारा (पचति) पक्का (दृढ़) कर ली है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्गदर्शक है

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य, गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, कोलकात्ता

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डा० महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक "ऋषि" दयानन्द की अमर गाथा शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख और इसी पुस्तक से लिखने की लिखी थी, सो दूसरा लेख इसी भांति है।

ऋषिवर दया, करूणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाईयां, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी अपने सुख-दुख के लिए न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरूडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिए संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किए रहती थी-भारत पुनः जगद्गुरू के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो ? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई मनगढ़न्त पोपलीलाएं कैसे दूर हों। इन झूठे पाखण्डी गुरूओं, महन्तों, सन्तों आदि की इन भोली-भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे ? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, कैसे दुःख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है।

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठ कर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोए। जो देश कभी शान्ति, सुख, मानवता और धन-धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन-हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा-एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाए हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते-बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके। करूणा स्वर से बोले हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता ? उनकी आंखों से आंसुओं की धारा अविरल बहने लगी। कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा-पूरा था। सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है ? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन-मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे-महाराजे, धनी-मानी उनके शिष्य बन गए। बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनिया को झुकाया, पर स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण शक्ति थी। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नव जीवन दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन-दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी, दुर्व्यसनों में फंसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश, धर्म जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किए हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहे तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा।

मुन्शीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराईयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया। भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही ऋषि जी की सत्य वाणी निकली-अमीचन्द! तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फंसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलट कर रख दिया। बाद में अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नज़र में एक अद्भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभु भक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गए। उनके विचार बदल गए। उन्होंने सारा जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया।

पंडित लेख राम, ऋषि के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि सारा जीवन आर्य जनों को सन्देश दे गए तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन के अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएं व बातें हैं जो आज के जीवन और जगत् को संभलने, सुधरने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्ति पूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान् होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम-कदम पर सिद्धान्त विरूद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्यपालन का व्रत लेना चाहिए।

thearyasamaj.org

पृष्ठ 4 का शेष- पति-पत्नी का.....

(स) वह (शतधार:) सैंकड़ों धारण शक्तियों वाला (स्वर्ग:) सुख पहुंचाने वाला (ओदन:) ओदन (सुख बरसाने वाला परमेश्वर) (महित्वा) अपने महत्त्व से (उभे) दोनों (नभसी) सूर्य और पृथ्वी (प्रकाशमान और अप्रकाशमान) लोकों में (वि आप) व्यापक हुआ है।

भावार्थ-हे स्त्री-पुरूषों। जैसे तुम्हारे माता-पिता ने पाप से छूटने के लिए अपनी कणिकाओं द्वारा परमात्मा का साक्षात् किया है वैसा ही तुम भी करो।

स्त्री पुरूषों को उचित है कि विद्वानों के समान परमात्मा के द्वारा रचे गए पदार्थों से यथावत् लाभ लें।

उभे नभसी उभयांश्च लोकान् ये यज्वनामभिजिता: स्वर्गा:।

तेषां ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्रे तस्मिन् पुत्रैर्जरसि सं श्रयेथाम्॥ - **अथर्व. 12.3.6**

पदार्थ-(ये) जो लोका (यज्वनाम) यज्ञ करने वालों के (अभिजिता:) सब ओर से जीते हुए और (स्वर्गा:) सुख पहुंचाने वाले हैं। (तेषाम्) उन लोकों के मध्य (य:) जो (परमेश्वर) (अग्ने) पहिले से (ज्योतिष्मान्) प्रकाशमय और (मधुमान्) ज्ञानमय है, (तस्मिन्) उस (परमेश्वर) में (वर्तमान) (उभे) दोनों (नभसी) सूर्य और पृथ्वी (प्रकाशित और अप्रकाशित) लोकों को (च) और (उभयान्) दोनों (स्त्री-पुरूष) समूह वाले (लोकान्) लोकों को (पुत्रै:) अपने पुत्रों के साथ (जरसि) स्तुति में रहकर (संश्रयेथाम्) तुम दोनों (स्त्री-पुरूष) मिलकर सेवन करें।

भावार्थ-स्त्री-पुरूषों को चाहिए कि परमात्मा द्वारा रचित पदार्थों का उचित उपयोग करें और अपनी सन्तानों के साथ यशस्वी बन कर आनन्द भोगें।

यद्यत् कृष्ण: शकुन एह गत्वात्सरन् विषक्तं बिल आससाद।

यद्वा दास्या ३र्द्रहस्ता समङ्क्त उलूखलं मुसलं शुम्भताप:।

-अथर्व. 12.3.13

पदार्थ-(यद्यत्) जब कभी (कृष्ण:) कुरेदने वाला (शकुन:) चील आदि (समान दुष्ट पुरूष) (इह) यहां (आ गत्वा) आकर (विषक्तम्) विष से (त्सरन्) टेढ़ा चलता हुआ (बिले) बिल में हमारे घर आदि में (आससाद) आया है। (वा) अथवा (यत्) यदि (आर्द्रहस्ता) भीगे हाथ वाली (दासी) हिंसक स्त्री (उलूखलम्) ओखली और (मुसलम्) मूसल को (समङ्क्ते) लिथेड़ देती है, (आप:) हे आप्त प्रजाओं। (उष दोष को) शुम्भत) नाश कर दो।

भावार्थ-यदि कोई कपटी पुरूष अथवा कोई दुष्ट स्त्री हमारे व्यवहारों में अथवा हमारे घर के बर्तनों, वस्त्र आदि में बखेड़ा डाले तो विद्वान् स्त्री-पुरूष उस दोष का प्रतीकार करें।

मनुष्यों को सदैव सत्सङ्ग में रहकर अपने घर को स्वर्ग बनाएं।

स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रै: स्याम।

गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्ऋतिर्मो अराति॥

-अथर्व. 12.3.17

पदार्थ-(हे विद्वान्) (स्वर्गम्) सुख पहुंचाने वाले (लोकम् अभि) समाज में (न:) हमको (नयासि) तू पहुंचा। हम (जायया) पत्नी के साथ और (पुत्रै: सह) पुत्रों के साथ (संस्याम्) मिले रहें। मैं (प्रत्येक मनुष्य) (हस्तम्) हाथ (गृह्णामि) पकड़ता हूं, वह (अत्र) यहां (मा अनु) मेरे साथ साथ (आ एतु) आवे।

(न:) हमको (मा) न तो (निर्ऋति) अलक्ष्मी (दरिद्रता) (मो) और न (अराति) कंजूसी (तारीत्) दबावे।

भावार्थ-मनुष्य विद्वानों के साथ रहें। सत्संग का लाभ लें। पति-पत्नी और संतान सब मिलकर दु:ख से दूर रहें। इससे उसे न तो दरिद्रता सता सकेगी और न वह कंजूस बनेगा।

पति-पत्नी को सदैव ईश्वर विश्वासी बनकर गृहस्थ आश्रम को सफल बनाना चाहिए।

उतेव प्रभ्वीरूत संमितास उत शुक्रा: शुचयाश्चा मृतास:।

ता ओदनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आप: शिक्षन्ती: पचता सुनाथा:॥

-अथर्व. 12.3.27

पदार्थ-(उत इव) और जैसी (प्रभ्वी:) प्रबल (उत) और (संमितास:) सम्मान की गई (च) और (शुक्रा:) वीर्य वाली (शुचय:) शुद्ध आचरण वाली (च) और (अमृतास:) अमर (सदा पुरूषार्थ युक्त) (प्रशिष्टा:) बड़ी विशिष्ट (शिक्षन्ती:) उपकार करती हुई (ता:) वे तुम सब (आप:) हे आप्त प्रजाओं। (सुनाथा:) हे बड़ी ऐश्वर्य वालियों। (दम्पत्तिभ्याम्) दोनों पति-पत्नी के लिए (ओदनम्) सुख बरसाने वाले (परमेश्वर) को (पचत) हृदय में दृढ़ करो।

अब एक मंत्र और देकर लेखनी को विराम देते हैं।

मनुष्यों को उचित है कि चाहे कोई सन्तान विवाह विधि से हुई हो अथवा नियोग द्वारा हुई हो दाय भाग में सम्मिलित करें।

ऋषि निर्वाणोत्सव एवं दीपावली पर्व मनाया

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की कामना का प्रतीक पर्व 'दीपावली' भारत की सांस्कृतिक परम्परा का महान पर्व है। आर्य समाज के गौरवमयी इतिहास में यह पर्व 'ऋषि निर्वाण दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में दिनांक 23 अक्तूबर 2014 को सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक 'ज्योति पर्व' पर आर्य समाज के संस्थापक एवं वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु 'ऋषि निर्वाण दिवस' कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने की एवं विशेष आमंत्रित महानुभाव पूर्व विधायक श्री महेन्द्र शास्त्री, डॉ० श्याम जी शर्मा वशिष्ठ (पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष), प्रसिद्ध उद्योगपति श्री निरंजन लाल डाटा आदि अनेक गणमान्य अतिथि जन समारोह में उपस्थित थे।

सर्वप्रथम विद्यालय की बालिकाओं एवं शिक्षिका श्रीमती ईश्वरी शर्मा द्वारा ईश वन्दना एवं ऋषि महिमा के सुमधुर गीत व भजन प्रस्तुत किए गए। तत्पश्चात विशिष्ठ अतिथि डॉ. श्याम जी शर्मा ने महान ऋषि के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु कहा कि स्वामी जी कालजयी महापुरूष थे। जिस मानव का जीवन उत्कृष्ट एवं आदर्श कृतित्व से परिपूर्ण हो वही महापुरूष कहलाने का सच्चा अधिकारी होता है। अत: ऋषि दयानन्द विश्व के महानतम पुरूषों में अग्रणी थे। स्वामी जी ने 'ज्योति पर्व' दीपावली को जागरण का पर्व बताया है। स्वामी जी आला दरजे के इंसान ही नहीं बल्कि फरिश्ते थे। यह देश का दुर्भाग्य है कि हम उस मानवता के पुजारी को ठीक से पहचान ही नहीं पाये। आज उनके महान कृतित्व के सही मूल्यांकन की महत्ती आवश्यकता है।

दीपावली के पावन पर्व पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि परम पिता परमात्मा ने अपनी अनुपम ज्योति से समस्त ब्रह्माण्ड को प्रकाशित किया है। ज्योति के प्रादुर्भाव से ही संस्कृति एवं साहित्य का सृजन हुआ है। श्री महेन्द्र शास्त्री जी ने प्रकाशोत्सव पर उपस्थित श्रोताओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की। भौतिक व आत्मिक सुखों में अन्तर स्पष्ट करते हुए उन्होंने जीवनोपयोगी बातें बताईं। जीवन दर्शन की प्रेरणादायी काव्यमय प्रस्तुति के माध्यम से आपने कहा कि मनुष्य की आध्यात्मिक ऊर्जा व आत्मिक शक्ति के साथ सच्चे मन से ईश्वरोपासना करनी चाहिए इसी से उसका कल्याण सम्भव है।

समारोह के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने अपने समापन सम्बोधन में कहा कि अंधकार अज्ञान का पर्याय है तथा प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। स्वामी जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि आर्य समाज ऋषि द्वारा प्रज्जवलित ज्योति को अक्षुण्य बनाए रखने का कार्य कर रहा है। पर्वों को हम सादगी से मनाएं, व्यर्थ की भव्यता का प्रदर्शन न करें तथा पर्वों के माध्यम से अपनी सन्तानों को सुसंस्करित करें तभी पर्वों का मनाया जाना सार्थक होगा। समारोह के अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित महानुभावों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद प्रेषित किया।

समारोह के अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित महानुभावों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद प्रेषित किया। इस अवसर पर आर्य समाज व आर्य कन्या विद्यालय समिति के पदाधिकारी व सदस्य, विद्यालय की शिक्षिकाएं व बालिकाएं एवं नगर के प्रबुद्ध नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

उप-प्रधान श्री अशोक कुमार आर्य एवं श्रीमती कमला शर्मा जी ने समारोह के संयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा मंत्री बृजेन्द्र आर्य ने मंच संचालन का कार्यभार सम्भाला। **-बृजेन्द्र आर्य**

यावन्तो अस्या: पृथिवी सचन्ते अस्मत् पुत्रा: परि ये संबभूवु:।

सर्वां सतां उप पात्रे ह्वयेथां नाभिं जानाना: शिशव: समायान॥ - **अथर्व. 12.3.40**

पदार्थ-(अस्या:) इस पत्नी के (यावन्त:) जितने (पुत्रा:) पुत्र (पृथिवीम्) पृथ्वी को (सचन्ते) सेवते हैं और (ये) जो (पुत्र) (अस्मत् परि) हम से पृथक् (संबभूवु:) उत्पन्न हुए हैं। (तान्) उन (सर्वान्) सबको (पात्रे) रक्षणीय व्यवहार में (उप ह्वयेथाम्) तुम दोनों निकट बुलाओ (नाभिम्) बन्धु धर्म (जानाना:) जानते हुए (शिशव:) बालक (समायान) मिलकर रहें। इति शम्।

thearyasamaj.org

वार्षिकोत्सव का आमंत्रण

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव 27 नवम्बर से 30 नवम्बर 2014 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है जिसमें मंगल यज्ञ होगा। जिसके ब्रह्मा पंडित बाल कृष्ण शास्त्री पुरोहित होंगे। आर्य जगत के उच्चकोटि के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. देव शर्मा जी वेदालंकार दिल्ली के प्रवचन एवं उपेन्द्र जी भजनोपदेशक चण्डीगढ़ के मनोहर भजन होंगे। समय प्रात: 7.30 बजे से 9.30 बजे तक एवं रात्रि 7.00 बजे से 9.00 बजे तक रहेगा। समापन समारोह 30 नवम्बर 2014 रविवार को प्रात: 8.30 बजे से 12.00 बजे तक होगा। सभी से प्रार्थना है कि परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर धर्म लाभ उठाएं। **-विजय सरीन प्रधान आर्य समाज**

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म दिवस मनाया

आज दिनांक 31.10.2014 को आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल में श्री वल्लभ भाई पटेल जी के जन्म दिवस पर उनके बारे में बताया गया। इस अवसर पर मुख्य तौर पर पहुंचे आर्य स्कूल के मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा श्री वल्लभ भाई पटेल जी का जन्म गुजरात में हुआ और उन्होंने देश के लिए क्या-क्या किया। इसके बारे में बच्चों को जागृत किया। इस अवसर पर बोलते हुए स्कूल के प्रिंसीपल श्री विजयपाल दयौड़ा जी ने श्री वल्लभ भाई पटेल के बारे में विस्तारपूर्वक बताया कि उस समय देश अलग-अलग प्रांतों में बंटा हुआ था और श्री वल्लभ भाई पटेल जी ने किस तरह सारे देश को एकत्रित किया। अपने भाषण में बच्चों को सम्बोधित किया। इस दिन को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया गया।

-प्रिंसीपल श्री विजयपाल दयौड़ा

महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला का 50 वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला का 50 वां वार्षिकोत्सव 3 नवम्बर से 9 नवम्बर 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रात:काल यजुर्वेद के मन्त्रों से यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि जी थे। माता सत्याप्रिया तथा श्री राजेश प्रेमी जी के मधुर भजन प्रतिदिन प्रात: और सायं होते रहे। भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने यजमान बन कर परिवार सहित यज्ञ में आहुतियां ड़ाली और पुण्य अर्जित किया।

मुख्य कार्यक्रम 9 नवम्बर 2014 रविवार को हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य यजमान डी. ए. वी. युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डा. सतीश कपूर जी थे। यज्ञ के पश्चात महात्मा चैतन्यमुनि जी के द्वारा यजमानों को आशीर्वाद तथा प्रसाद दिया गया। यज्ञ के पश्चात महात्मा चैतन्यमुनि जी तथा माता बिमला मित्तल जी के करकमलों से ध्वजारोहण हुआ। लब्भू राम दोआबा स्कूल के विद्यार्थियों ने बैंड बजाकर तथा ध्वजगीत के साथ ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात प्रात:राश ग्रहण किया गया। प्रात:राश के पश्चात गुरूकुल करतारपुर के प्रधान श्री ध्रुव मित्तल की अध्यक्षता में मुख्य सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में देवराज आर्य स्कूल की छात्राओं, कन्या महाविद्यालय की छात्राओं, श्री राजेश प्रेमी तथा श्रीमती रश्मि घई जी के मधुर भजन हुए। डी.ए.वी. युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री डा. सतीश कपूर जी तथा कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती प्रो. आतिमा शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर तथा आर्य समाज के कार्यों पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता महात्मा चैतन्य मुनि जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला और आर्य समाज तथा राष्ट्र के लिए उनके योगदान को सराहा। इस सारे कार्यक्रम का संचालन महर्षि दयानन्द मठ के प्रधान श्री कुन्दन लाल अग्रवाल जी ने किया और सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि मठ के महामन्त्री श्री रवि मित्तल जी, मन्त्री श्री सत्यशरण गुप्ता जी तथा अन्य सहयोगियों की मेहनत और लग्न से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री कुन्दन लाल जी ने आए हुए सभी महानुभावों तथा विद्वानों का धन्यवाद किया। श्री ध्रुव मित्तल जी के अध्यक्षीय भाषण के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। **-कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान महर्षि दयानन्द मठ**

धार्मिक एकता वैलफेयर सोसाइटी द्वारा ट्रैफिक नियमों के बारे में सैमीनार

धार्मिक एकता वैलफेयर सोसाइटी एवं पुलिसिंग कम्युनिटी सुविधा सैंटर के सहयोग से सोसाइटी के प्रधान श्री अजय कुमार सिद्धू एवं इंस्पैक्टर श्री देवराज जी की अध्यक्षता में दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में ट्रैफिक पुलिस द्वारा स्कूली बच्चों को ट्रैफिक नियमों के बारे जागरूक किया गया। इसमें मुख्य अतिथि सिटिज़न कौंसिल के चेयरमैन श्री दर्शन अरोड़ा ट्रैफिक पुलिस के A.S.I. स. सुखदेव सिंह जी ने बच्चों को ट्रैफिक नियमों की जानकारी देते हुए बताया कि आप सबको हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए और सोलह साल से छोटी उम्र के बच्चों को कोई वाहन नहीं चलाना चाहिए क्योंकि उसमें ऐक्सीडेंट होने का खतरा रहता है और उसमें आपकी जान भी जा सकती है। फिर उन्होंने बताया कि अगर आप पैदल चल रहे हो और आपको सड़क पार करनी है तो कभी भी भाग कर पार न करें क्योंकि ऐसा करने से आप बीच सड़क में गिर सकते हैं और कोई भारी वाहन आपके ऊपर से गुजर सकता है जिससे आपकी मौत हो सकती है। इसके पश्चात् उन्होंने नशे न करने के बारे में बच्चों को जागरूक किया कि अगर आप नशा करते हो (कोई भी) वो कानूनी जुर्म है और इससे हमारी आने वाली नस्लों पर विपरीत असर पड़ेगा और हम हर क्षेत्र में पिछड़ जाएंगे। इसलिए हमें इन सब व्यस्नों से कोसों दूर रहना चाहिए और नशा करके कभी गाड़ी नहीं चलानी चाहिए और गाड़ी की स्पीड भी कम ही रखनी चाहिए। फिर इसके पश्चात् इंस्पैक्टर श्री देवराज जी ने बच्चों को ट्रैफिक नियमों बारे में बताते हुए कहा कि ये कोई सन्त महात्माओं के प्रवचन नहीं हैं जिन्हें सुनकर आप उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहो या न अपनाना चाहो यह आपकी मर्जी होती है परन्तु इन नियमों का पालन तो आपको अपने जीवन में करना बड़ा जरूरी है क्योंकि अगर आप इन नियमों को पूरी लगन के साथ अपनाओगे तो कभी किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होओगे। फिर उन्होंने इन नियमों की तुलना मैथ के सवालों से करते हुए कहा कि जिस प्रकार आपका मैथ का पूरा सवाल ठीक होता है उसमें कोई गल्ती नहीं होती और आपको उसमें अपने पूरे अंक आने की आशा होती है और यह विश्वास भी होता है कि इस प्रश्न/उत्तर में मेरा कोई अंक नहीं कटेगा उसी प्रकार अगर हम ट्रैफिक नियमों का पालन भी पूरी मेहनत और लगन से करेंगे तो हमारे साथ कभी कोई दुर्घटना घट ही नहीं सकती। इसके पश्चात् स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने आए हुए सब सज्जनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने बच्चों को ट्रैफिक नियमों के बारे में बच्चों को सचेत करते हुए नशों से दूर रहने के बारे में भी बहुत अच्छी तरह से बताया फिर उन्होंने कहा कि ट्रैफिक नियमों के बारे में बच्चों को सिलेबस की बुक लगवानी चाहिए जिससे कि यह सारी बातें बच्चे रूटीन में सीख सकें और देश के अच्छे नागरिक बन सकें। इस अवसर पर श्री दविन्द्र कुमार जी, रमन कुमार, भूपिन्द्र सिंह, वीरेन्द्र कुमार और A.S.I. स. लखविन्द्र सिंह जी मौजूद थे। इस अवसर पर स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के मैम्बर श्री कृष्ण पासी जी, श्री रमाकान्त जी, श्री सुरिन्द्र कुमार जी, श्री अरूण सूद जी, श्रीमती रमेश महाजन जी और मैडम रेनू बहल मौजूद थे। मंच का संचालन मैडम श्रीमती ज्योति अरोड़ा ने किया। इस सारे कार्यक्रम के पश्चात् जलपान का अति उत्तम प्रबन्ध था। **-रेनूं बहल**

सभी आर्यजनों का आभार

गत 11 सितम्बर 2014 को मुझ पर हृदयाघात का आक्रमण हो गया था। अत: चार दिनों तक 'फोरटिस ऐस्कर्ट हस्पताल' में रहना पड़ा। वहां मेरा एञ्जिओ प्लास्टि ऑपरेशन हुआ। दो स्टण्ट पड़े हैं। इस समय मैं घर पर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहा हूं। पर्याप्त स्वस्थ हूं। इस काल में देश विदेश के आर्यजनों ने जो अपना स्नेह प्रदान किया है तथा शुभकामनाएं व सहयोग दिया है इसके लिए मैं सबका आभार व्यक्त करता हूं।

-पंडित सत्यपाल 'पथिक' (आर्य भजनोपदेशक)

thearyasamaj.org

वेदवाणी

हमारा जीवन यज्ञमय हो

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः॥

ऋ० १०।५७।१, अथर्व० १३।३।५९

विनय-हे इन्द्र, परमैश्वर्यवान्! हम तुमसे ऐश्वर्य नहीं मांगते। हमारी तुमसे याचना तो यह है कि हम सदा सन्मार्ग पर चलते जाएं, इसको कभी न छोड़ें। सन्मार्ग पर चलते हुए हमें जो कुछ ऐश्वर्य मिलेगा वही सच्चा ऐश्वर्य होगा। जिस किसी प्रकार मिला हुआ 'ऐश्वर्य' ऐश्वर्य नहीं होता-उसमें ईश्वरत्व नहीं होता-सामर्थ्य नहीं होता। सन्मार्ग से जो कुछ ऐश्वर्य मुझे मिलेगा, उस ऐश्वर्य को तुझसे पाकर हे इन्द्र! मेरी प्रार्थना है कि मैं यज्ञ से कभी विचलित न होऊं। यज्ञ करता हुआ-उपकार करता हुआ ही मैं उस तेरे दिये ऐश्वर्य को भोगूं। जो कुछ तुम्हारे द्वारा (तुम्हारे देवों द्वारा) मुझे मिला है, उसे तुम्हें (देवों को) बिना दिये भोगना चोरी है। ऐसा पाप स्वार्थवश हम कभी न करें। यज्ञ को, आत्मत्याग को, पदार्थ में आत्म-विसर्जन को हम कभी न भूलें। यज्ञ के बिना भोग भोगना विषपान करना है, अतः हमारी दूसरी प्रार्थना है कि हम यज्ञ को कभी न छोड़ें।

हमारी तुमसे यह प्रार्थना नहीं है कि तुम हमारे शत्रुओं का नाश कर दो। हमारी याचना तो यह है कि हमारे अपने अन्दर 'अराति' न ठहरें। हमारे अन्दर अराति न हों तो बाहर हमारा अराति कोई कैसे हो सकता है। अराति अर्थात् अदानभाव हमारे अन्दर क्षण-भर भी न ठहरे, क्षण भर के लिए भी न आए। अदानभाव होते हुए यज्ञ असम्भव है, अतः हमारा एकमात्र शत्रु अदानभाव ही है। यह अन्दर का शत्रु ही हमारा शत्रु है। हे प्रभो! इससे हमारी रक्षा करो। फिर बाहर के किसी शत्रु की हमें परवाह नहीं।

साभार-वैदिक विनय

शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

हम अंधकार से लड़कर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा लें। हृदय में ज्ञान की ज्योति जलाएं। यह आह्वान श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा आयोजित शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस पर किया। श्री आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रोद्धार एवं वेदोद्धार हेतु समर्पित जीवन पर प्रकाश डालते हुए महर्षि के उपकारों का वर्णन किया।

आरम्भ श्री मनन्त देव शर्मा, उप-प्रधान, आर्य समाज हिरण मगरी के पुरोहित्व में सम्पन्न यज्ञ से हुआ। समाज के वरिष्ठजन श्री बसंत लाल कोहली एवं डॉ० एस. सी. खोसला का 75 वर्ष आयु प्राप्त करने के उपलक्ष्य में समाज के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, प्रो. डॉ० अमृत लाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, संजय शांडिल्य, मुकेश पाठक व दिनेश अग्रवाल ने श्रीफल, उपर्णा एवं शाल द्वारा अभिनन्दन किया। श्री इन्द्रदेव पीयूष ने शास्त्रीय शैली में ईश-भजन एवं ऋषि भजन-"ऋषिराज तुम तो अकेले जीवन की होली खेले।" प्रस्तुत किये। आभार श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री आर्य समाज हिरण मगरी ने ज्ञापित किया। संचालन समाज के उप मंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। समाज के सदस्य श्री इन्द्र प्रकाश यादव द्वारा शांति पाठ एवं जयघोष के साथ वैदिक पर्व सम्पन्न हुआ।

भूपेन्द्र शर्मा उपमन्त्री

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।